का दाना पकड़े हुए शुक का भ्रम हो रहा है।

दावाग्नि- जंगल की आग

(iii) "फिरत घरन नूतन पथिक, चले चकित चित भागि।
फूल्यो देखि पलास बन, समुहें समुझि दवागि॥"

यहाँ वसंत ऋतु में विदेश-गमन करने वाले नये पथिक पुष्पित पलास वन को देखकर (पलास के फूल बहुत लाल होते हैं) उसे दावाग्नि समझ डर से फिर घर लौट आते हैं।

* असंगति अलंकार :→ (06), (04), (02)

"कार्यकारयोर्भिन्नदेशतायामसंगतिः।"

असंगति अलंकार में कार्य और कारण का भिन्न - भिन्न स्थान पर वर्णन होता है। सामान्यतः कारण और कार्य साथ - साथ रहते हैं, किन्तु कारण कहीं और कार्य कहीं का वर्णन हो तो असंगति अलंकार होता है। 'असंगति' का अर्थ है - संगति नहीं। अर्थात् कारण और कार्य में संगति या साहचर्य का अभाव। नियमतः जहाँ कारण रहता है वहीं कार्य भी होता है इस नियम के विपरीत असंगति में कारण कहीं और कार्य कहीं देखा जाता है। असंगति में विरोध का कुछ - न - कुछ आभास सर्वत्र रहता है। विरोध के आभास के अभाव में कारण और कार्य की भिन्नदेशता में भी यह अलंकार नहीं होता।

उदाहरण :→

(i) " मेरे जीवन की उलझन, बिखरी थीं उनकी अलकें।
पी ली मधु मदिरा किसने, थीं बंद हमारी पलकें।
— (जयशंकर प्रसाद)

(ii) " दृग उरझत, टूटत कुटुम, जुरत चतुर-चित्त प्रीति।
परत गाँठ दुरजन हिये, दई नई यह रीति॥"

✓ * विरोधाभास अलंकार :→ (06), (04), (03)

" आभासत्वे विरोधस्य विरोधाभास इष्यते।"

जहाँ दो वस्तुओं में मूलतः विरोध न होने पर भी विरोध के आभास का वर्णन किया जाए वहाँ विरोधाभास अलंकार होता है।

विरोधाभास का अर्थ है — विरोध का आभास (झलक)। यह विरोध प्रायः शब्दाश्रित ही होता है, अर्थाश्रित नहीं। अर्थ की ठीक अवगति होने पर विरोध दूर हो जाता है। उदाहरण →

" या अनुरागी चित्त की, गति समुझे नहिं कोय।
ज्यों-ज्यों बूड़े स्याम रंग, त्यों-त्यों उज्ज्वल होय॥"

इस उदाहरण में ज्यों-ज्यों स्याम रंग में अनुरागी चित्त डूबता है, त्यों-त्यों उज्ज्वल होता जाता है। इस पंक्ति में विरोध भाव प्रतीत हो रहा है। क्योंकि काले रंग में डूबने पर काला ही होना चाहिए, न कि उज्ज्वल (श्वेत)। लेकिन यहाँ विरोध नहीं है, क्योंकि 'श्याम रंग' का आशय श्रीकृष्ण की भक्ति से है। कृष्ण की भक्ति में भक्त का

Teacher's Signature

चित्त जितना ही डूबेगा, उसका हृदय उतना ही उज्ज्वल होगा। अतः यहाँ विरोध का आभास मात्र है।

* विभावना अलंकार :→ (06), (04), (03)

"विभावना बिना हेतुं कार्योत्पत्तिर्यदुच्यते।"

जहाँ कारण के अभाव में कार्य का वर्णन हो, वहाँ विभावना अलंकार होता है। विभावना का अर्थ है – विशिष्ट कल्पना। कारण के अभाव में कार्योत्पत्ति का कथन विशिष्ट कल्पना से ही संभव है। इसीलिए इसे विभावना कहते हैं। कारण के अभाव में कार्य उत्पन्न हो ही नहीं सकता, पर जहाँ इस प्रकार का वर्णन रहता है वहाँ भी प्रसिद्ध कारण को छोड़कर अप्रसिद्ध कारण के योग से कार्य की उत्पत्ति का वर्णन चमत्कार द्वारा किया जाता है। इसके छः भेद माने गए हैं –

(i) प्रथम विभावना :→ कारण के अभाव में कार्य का होना। उदाहरण –

"बिनु पद चलै, सुनै बिनु काना।
कर बिनु कर्म करै बिधि नाना॥" – (तुलसीदास)

(ii) द्वितीय विभावना :→ अपर्याप्त कारण से कार्य की उत्पत्ति का वर्णन। उदाहरण –

"काम कुसुम-धनु सायक लीन्हें।
सकल भुवन अपने बस कीन्हें।"

इस उदाहरण में फूल के धनुष-बाण से सारे विश्व को वश में करना अपर्याप्त कारण से कार्य की उत्पत्ति का कथन है।

(iii) तृतीय विभावना :→ यहाँ प्रतिबंधक के रहते हुए भी कार्य का हो जाना वर्णित होता है।
उदाहरण –
" नैना नेकु न मानहीं, कितो कहौं समुझाय।
ये मुँहजोर तुरंग लौं, ऐंचत हू चलि जायँ॥" – (बिहारी)
इस उदाहरण में रोकने पर भी नैनों का न मानना प्रतिबंधक के रहते हुए भी कार्य का हो जाना कहा जाएगा।

(iv) चतुर्थ विभावना :→ यहाँ अकारण से कार्य की उत्पत्ति का वर्णन होता है। उदाहरण –
(क) " चुभते ही तेरा अरुण बान।
बहते कन-कन से फूट-फूट मधु के निर्झर से सजल गान।"
इन पंक्तियों में बान के लगने से गान का फूट पड़ना अकारण से कार्य की उत्पत्ति का कथन है।
(ख) " चंपलता से उड़ि रही, गहब गुलाब सुबास।
रैन अमावस से लखौ, प्रगट्यो परत प्रकास॥"
इस उदाहरण में चंपक लता से गुलाब की गंध और अमावस्या की रात से प्रकाश की उत्पत्ति कही गई है। अतः यहाँ अकारण से कारण की उत्पत्ति है।

Teacher's Signature

(v) पंचम विभावना :→ यहाँ विरुद्ध कारण से कार्य की उत्पत्ति का वर्णन होता है। उदाहरण-
" आग हूँ जिससे ढ़लकते बिन्दु हिमजल के।"
— (महादेवी वर्मा)
यहाँ आग से हिम-जल का ढ़लकना कहा गया है जो विरुद्ध कारण से कार्य की उत्पत्ति है।

(vi) षष्ठ विभावना :→ यहाँ कार्य से कारण की उत्पत्ति बताई जाती है। उदाहरण -
" और नदी-नद तें, कोकनद होत तेरी।
कर कोकनद नदी-नद प्रगटत हैं।"
कोकनद का अर्थ होता है-कमल। इन पंक्तियों में दानशीलता का वर्णन है। संसार में नदी-नद से कमल की उत्पत्ति होती है। यहाँ कर-कमल से नदी-नद की उत्पत्ति हो रही है (दान के समय संकल्प के जल की अधिकता के कारण नदी-नद बह चलते हैं)। यहाँ कार्य (कमल) से कारण (नदी) का उत्पन्न होना कहा गया है।

* अतिशयोक्ति अलंकार :→ (07), (04), (02)

" उपमेयं निर्गीय उपमानेन तस्याभेदकथनम् अतिशयोक्तिः"
जहाँ उपमेय (प्रस्तुत) को छिपाकर उपमान (अप्रस्तुत) के साथ उसके अभेद का वर्णन हो, वहाँ अतिशयोक्ति अलंकार होता है। अतिशयोक्ति का अर्थ है अतिशय (बढ़ा-चढ़ाकर) + उक्ति (कथन) अर्थात् इस अलंकार में किसी वस्तु का चमत्कारपूर्ण

कोविद - बृहस्पति, बानी - सरस्वती)

PAGE NO.:
DATE: / /200

अतिशय वर्णन होता है। उदाहरण -

(क) " धनुष उठाया ज्यों ही उसने,
और चढ़ाया उस पर बाण।
धरा सिन्धु नभ काँपे सहसा,
विकल हुए जीवों के प्राण ॥"

(ख) " विधि हरि हर कवि कोविद बानी।
कहत साधु महिमा सकुचानी ॥"

यहाँ सज्जनों की महिमा का वर्णन करने में ब्रह्मा, विष्णु, महेश, कवि, बृहस्पति और सरस्वती भी संकोच करती हैं, अर्थात् अपने को असमर्थ पाती हैं।

अतिशयोक्ति के छः भेद माने गए हैं -

(i) रूपकातिशयोक्ति :→

जहाँ उपमेय को छिपाकर उपमान के द्वारा उसका बोध कराया जाए वहाँ रूपकातिशयोक्ति अलंकार होता है। उदाहरण -

" बाँधा था विधु को किसने इन काली जंजीरों से।

स्पष्टीकरण :- इस पंक्ति में मुख पर झूलती काली लटों की उपमा काली जंजीरों से बँधे चंद्रमा से दी गई है। चंद्रमा को काली जंजीरों से नहीं बाँधा जा सकता इसलिए यहाँ अतिशयोक्ति अलंकार है।

(ii) भेदकातिशयोक्ति :→

जहाँ अभेद रहने पर भी भेद वर्णित हो वहाँ भेदकातिशयोक्ति अलंकार होता है। उदाहरण -

" नयी अरुणिमा जगी अनल में, नवलोज्ज्वलता जल में,
नभ में नव्य नीलिमा, नूतन हरियाली भूतल में।"

यहाँ कृष्ण के आगमन से अग्नि में नई लालिमा, जल में नवीन उज्ज्वलता, आकाश में अपूर्व नीलिमा और भूतल में नूतन हरियाली का आना वर्णित है। वस्तुतः इनमें नयापन आता नहीं है। यहाँ अभेद रहने पर भी 'नया' शब्द से भेद दिखाया गया है।

(iii) असंबंधातिशयोक्ति :→

जहाँ संबंध रहने पर भी संबंध का अभाव कहा जाए वहाँ असंबंधातिशयोक्ति अलंकार होता है। उदाहरण –

" वह सजीव रचना थी युग की,
पल में आकर झलकी,
नहीं समायी जड़-जंगम में,
छवि उसकी जो छलकी।"

यहाँ श्रीकृष्ण की छवि का जड़-जंगम में समाने पर भी नहीं समाना कहा गया है।

(iv) संबंधातिशयोक्ति :→

यह भेद असंबंधातिशयोक्ति के विपरीत है। इस अलंकार में संबंध न रहने पर भी संबंध दिखलाते हुए अतिशयोक्ति की जाती है। उदाहरण :→

" पड़ी तरल यमुना तरंगिनी
घनी खड़ी हो जावे,

तो उस अंग - भंगिमा का कुछ
रंग - ढंग वह पावे।" — ('द्वापर' - गुप्त)

कृष्ण के शरीर का आंशिक सादृश्य पाने के लिए तरल यमुना के घन - रूप में खड़ा हो जाने की कल्पना असंबंध में संबंध का कथन है।

(v) अक्रमातिशयोक्ति :→

यहाँ कार्य और कारण का एक साथ होना कहा जाता है। उदाहरण—
"वह शर इधर गांडीव - गुण से भिन्न जैसे ही हुआ, धड़ से जयद्रथ का उधर सिर छिन्न वैसे ही हुआ।"

(vi) अत्यंताशियोक्ति :→

इस अलंकार में कारण के पहले कार्य का होना कहा जाता है। उदाहरण—
"पड़ी अचानक नदी अपार
घोड़ा कैसे उतरे पार ?
राणा ने सोचा इस पार
तब तक चेतक था उस पार।" — ('हल्दीघाटी' महाकाव्य

राणा जबतक ये सोचें कि घोड़ा कैसे नदी पार उतरे तबतक चेतक उस पार था। यहाँ कारण के पहले ही कार्य का होना कहा गया है।